

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उपीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

शहरी हरियाली में मृत्यु दर घटाने का रहस्य छुपा है

यजुर्विद संहिता का एक सूत्र है: हरित्समुच्चयः शुभहेतुरेषः, स्वस्थं शरीरं मनसश्च शान्तिम्। विनाशयत्याशु गदस्तथान्याः, सुजल्ययुं दीर्घमयो समृद्धिम्।। तात्पर्य यह है कि हरियाली का विस्तार शुभ का कारण है। यह शरीर को स्वस्थ बनाती है और मन को शांति प्रदान करती है। यह शीघ्र ही रोगों और अन्य कष्टों को नष्ट करती है और दीर्घायु तथा समृद्धि को उत्पन्न करती है। आज की चर्चा इसके वैज्ञानिक विश्लेषण पर है।

कभी आपने सोचा है कि हमारे आसपास के हरे-भरे पेड़, पार्क और हरियाली हमें कैसे जिंदा रख सकते हैं? यह कहानी एक ऐसे सफर की है जहां विज्ञान और प्रकृति के बीच की अनेदखी डोर ने मानव जीवन को न केवल लंबा किया है, बल्कि इसे शांत और स्वस्थ भी बनाया है।कल्पना कीजिए, एक ऐसा दिन जब शहरों में हरियाली का नामो-निशान मिट चुका हो। हर तरफ केवल कंक्रीट का जंगल, धूल-धुआं और बेचैनी। यही तो आधुनिक शहरीकरण की सच्चाई है, जहां हरियाली कम होती जा रही है। लेकिन विज्ञान ने हमें बताया है कि यह कहानी किसी त्रासदी की ओर बढ़ सकती है। शोध बताते हैं कि जो लोग हरियाली के पास रहते हैं, उनकी मृत्यु दर कम होती है। यह केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि जीवन और मृत्यु के बीच की कहानी है।

एक बृद्ध महिला की कहानी लींजिए, जो शहरी कोलाहल में अपने घर की छिडकी से केवल कंक्रीट की इमारतें देखती है। वह अकेली रहती है, उसका स्वास्थ्य खराब है, और वह अक्सर अस्पताल जाती है। लेकिन एक दिन, उसकी बेटी उसे एक ऐसे घर में ले जाती है, जहां छिडकी के बाहर एक बड़ा बगीचा है। कुछ महीनों में, उसकी मानसिक स्थिति में सुधार होता है, उसकी हृदय गति सामान्य हो जाती है और वह पहले से बेहतर महसूस करने लगती है। यह कहानी केवल भावनात्मक नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक है। अध्ययन बताते हैं कि हरियाली हृदय संबंधी बीमारियों, मानसिक तनाव और श्वसन तंत्र पर अद्भुत प्रभाव डालती है।

हरियाली का प्रभाव केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह सामुदायिक स्तर पर भी लाभकारी है। जरा सोचिए, एक ऐसा इलाका जहां हरियाली की कमी हो, वहां अपराध दर अधिक होती है। लेकिन जैसे ही एक पार्क का निर्माण होता है, बच्चों के लिए खेलने की जगह मिलती है, वयस्कों के लिए टहलने के रास्ते बनते हैं, क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव आने लगते हैं। यह केवल एक सामाजिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य और कल्याण का विस्तार है।

क्या हरियाली के बिना भी जीवन संभव है? वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो नहीं। चीन में एक अनोखा अध्ययन बताता है कि अत्यधिक ठंड या गर्मी से होने वाली मौतों को हरियाली नाटकीय रूप से कम कर सकती है। यह शोध स्पष्ट करता है कि हरियाली केवल सौंदर्य का स्रोत नहीं है, बल्कि यह जीवन रक्षक भी है। हरियाली केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति और दीर्घायु का आधार भी बन सकती है।

दक्षिण एशियाई देशों में हरियाली के महत्व को समझना और भी आवश्यक हो जाता है। शहरीकरण के कारण हरियाली के क्षेत्र सीमित हो गए हैं, जिसके शारीरिक गतिविधियों में कमी और संबंधित बीमारियों, जैसे मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप, में वृद्धि हुई है। हरियाली को उपयोगी बनाने के लिए डिज़ाइन में सुधार आवश्यक है। उदाहरण के लिए, महिानाओं और बच्चों के लिए पुरोक्ष और सुभ्रम और सुभ्रम पार्क बनाना, जहां वे बिना किसी डर के टहल सकें।

कम आय वाले और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए हरियाली का सकारात्मक प्रभाव अधिक होता है। गरीब और वंचित समुदाय, जिनके पास स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य संसाधनों तक सीमित पहुंच होती है, हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। यह न केवल स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने में मदद करता है, बल्कि सामाजिक समानता को बढ़ावा देने का भी एक प्रभावी साधन है।

क्या आप जानते हैं कि ब्लू स्पेस (जैसे तालाब, झील) का भी स्वास्थ्य पर प्रभाव हो सकता है? ब्लू और ग्रीन स्पेस का संमिलित प्रभाव श्वसन और कार्डियोवैस्कुलर बीमारियों से होने वाली मृत्यु दर को कम कर सकता है। शोध स्पष्ट करता है कि पानी और हरियाली के बीच का यह जुड़ाव हमारी सेहत के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

अब जरा एक छोटे लड़के की कल्पना करें, जो बड़े शहर में हरियाली के बिना पला-बढ़ा है। उसकी श्वसन समस्याएं बढ़ जाती हैं, और वह अक्सर अस्पताल जाता है। लेकिन जब वह एक गांव में अपने दादा-दादी के पास जाता है, जहां हर तरफ पेड़ और खेत हैं, तो उसका स्वास्थ्य बेहतर हो जाता है। यह सिर्फ एक कहानी नहीं है, बल्कि हकीकत है। अध्ययनों ने दिखाया है कि हरियाली केवल बीमारी को रोकने का साधन नहीं है, बल्कि यह पुनर्वास और उपचार का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकती है।

नीचे प्रस्तुत शोध के आंकड़े और उनके निष्कर्षों में हरियाली और स्वास्थ्य के बीच संबंधों पर व्यापक और समग्र विवरण देखा जा सकता है।

अलफनो और साथियों (Environmental Research: 216, 2023) ने 5३8 नमूनों पर अध्ययन किया। उन्होंने गर्भावस्था के दौरान माताओं के हरियाली के संपर्क का नवजात शिशुओं के डीएनए मिथाइलेशन पर प्रभाव देखा। 1४7 डिफरेंशियल मिथाइलेटेड क्षेत्र की पहचान की गई, जिनमें से 8५ क्षेत्रों ने प्रदूषण, सड़क की दूरी, शहरीकरण और पड़ोस की आय जैसे कारकों के बावजूद भी महत्वपूर्ण परिणाम दिखाए। यह अध्ययन हरियाली और आनुवंशिक प्रभावों के बीच संबंध को रेखांकित करता है।

कामी-नर्नल और साथियों (Health and Place: 82, 2023) ने हरियाली और टाइप-2 मधुमेह के बीच संबंध पर 1३ कोहोर्ट अध्ययनों का विश्लेषण किया, जिनमें १,७०0 से १९,२२,५४५ प्रतिभागी शामिल थे। उन्होंने पाया कि जिन व्यक्तियों को अधिक हरियाली का संपर्क मिला, उनमें टाइप-२ मधुमेह की घटनाएं कम थीं।

डिमाकोपुलू और साथियों (Frontiers in Epidemiology, ३, 2023) ने यूरोप के नौ देशों में २०४ मिलियन व्यक्ति-वर्ष और ३.१ मिलियन मौतों के आंकड़ों का विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि पी.एम.२.५, नाइट्रोजन के ऑक्साइड और ब्लैक कार्बन के संपर्क से मृत्यु दर बढ़ती है, लेकिन हरियाली

इन शोधों ने हरियाली के व्यापक लाभों

को दर्शाया है, जिसमें मृत्यु दर में कमी,

स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक

असमानताओं को कम करने की क्षमता

शामिल है। यह स्पष्ट है कि हरियाली

मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को

सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

अधिकारी और साथियों (The Lancet Planetary Health, ४, e135-e136, 2020) ने दक्षिण एशिया के संदर्भ में हरियाली और स्वास्थ्य का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि शहरीकरण के कारण हरियाली की कमी मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी बीमारियों को बढ़ाती है। उन्होंने सुझाव दिया कि हरियाली के डिज़ाइन और उसकी उपलब्धता में सुधार के लिए नीतिगत प्रयासों की आवश्यकता है।

बट्टैड और साथियों (Public Health, 200:91-98, 2021) ने १३ एक्सपोजर-रिस्पॉन्स फंक्शनका उपयोग किया और निष्कर्ष निकाला कि एनडीवीआई में ०.१ की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर के जोड़िम अनुपात को ०.9६ तक कम कर सकती है।

कुआ और ली (Perspectives in Public Health, 1४1: 342-353, 2021) ने २० अध्ययनों (१३३,३६३ प्रतिभागी और २०२ मिलियन व्यक्ति) का विश्लेषण किया और पाया कि हरियाली का अधिक संपर्क सामान्य मृत्यु दर को ३ प्रतिशत तक कम कर सकता है।

झोट और साथियों (Sustainable Cities and Society, 11६, 2024) ने २१ अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि ब्लू और ग्रीन स्पेस का संयुक्त प्रभाव श्वसन और हृदय संबंधी मृत्यु दर को कम करता है।

ही और साथियों (Science of the Total Environment, 851, 2022) स्ट्रोक से संबंधित मौतों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि हरियाली ने टंड और गर्मी से संबंधित स्ट्रोक मृत्यु दर को कम किया। उच्च एनडीवीआई ने विशेष रूप से गर्मी के प्रभाव को कम करने में सहायता की।

रिगोलो और साथियों (International Journal of Environmental Research and Public Health, 1८: 1-29, 2021) ने 9० अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि गरीब और वंचित समुदाय हरियाली से अधिक लाभान्वित होते हैं। हरियाली इन समुदायों में स्वास्थ्य असमानताओं को कम करती है।

रॉजस-रूइडा और साथियों (The Lancet Planetary Health, ३:e469-e477, 2019) ने ८.३ मिलियन प्रतिभागीयों पर नौ अध्ययनों का विश्लेषण किया और पाया कि एनडीवीआई में ०.१ की वृद्धि सामान्य मृत्यु दर को ४ प्रतिशत तक कम कर सकती है।

सिमथ और साथियों (Cities, 11९, 2021) ने ब्लू स्पेस के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए पाया कि ब्लू स्पेस का संपर्क मोटापे और सामान्य मृत्यु दर में सुधार करता है।

युआन और साथियों (Aging Clinical and Experimental Research, 33:1783-1797, 2021) ने बुजुर्ग व्यक्तियों पर हरियाली के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि हरियाली का संपर्क सामान्य और स्ट्रोक मृत्यु दर को कम करता है।

इसी प्रकार जरे सखाविदि इत्यादि (Science of the Total Environment, 838, 156180, 2022) द्वारा हरियाली और कैसर के संबंध पर १८ अध्ययनों का मेटा-विश्लेषण बताया है कि फेफड़ों और अन्य प्रकार के कैसर पर हरियाली के सकारात्मक प्रभाव के संकेत मिले।

इन शोधों ने हरियाली के व्यापक लाभों को दर्शाया है, जिसमें मृत्यु दर में कमी, स्वास्थ्य सुधार और सामाजिक असमानताओं को कम करने की क्षमता शामिल है। यह स्पष्ट है कि हरियाली मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

लेकिन हम इस ज्ञान का उपयोग कैसे कर सकते हैं? व्यक्तिगत स्तर पर, हम अपने आस-पास अधिक से अधिक पौधे लगा सकते हैं। पड़ोस के पार्क में नियमित रूप से समय बिताना हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। जैसा कि यजुर्विद संसिता में कहा गया है: वनं प्रविश्य प्रचलन्ति ये ते, धृतिं लभन्ते हृदये सदा वै। तनुः सुदृढया मनसः प्रसादं, विधाय सेव्यं शमयेत्तु व्यथाश्च।। तात्पर्य यह है कि वन में प्रवेश करके जो लोग पैदल भ्रमण करते हैं, वे सदा अपने हृदय में स्थिरता (धैर्य और शक्ति) प्राप्त करते हैं। उनका शरीर सुदृढ़ होता है और मन प्रसन्न हो जाता है। इस प्रकार,वन को सेवन करते हुए (वन में नियमित भ्रमण करते हुए), शारीरिक और मानसिक दुखों और कष्टों को शांत किया जा सकता है।

बच्चों को प्रकृति के संपर्क में लाना,उन्हें पेड़ों और हरियाली के महत्व के बारे में सिखाना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रशासन के लिए यह जरूरी है कि हरियाली को शहरी योजना का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए। पार्क का निर्माण, प्रासासनिक स्थानों पर हरियाली बसाना और ब्लू-ग्रीन स्पेस का प्रबंधन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। इसके साथ ही, सामाजिक असमानता को ध्यान में रखते हुए ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए, जो गरीब और वंचित समुदायों के लिए अधिक सुलभ हों।

हरियाली का महत्व केवल स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है। यह हमारी संस्कृति, हमारे समाज,और हमारे अस्तित्व का आधार है। यह हमें न केवल जिंदा रखती है, बल्कि हमें जीवन जीने का तरीका भी सिखाती है। यह समय है कि हम इस ज्ञान को अपनाएं और अपने जीवन में हरियाली को स्थान दें। आखिरकार, यह केवल पेड़ों और पौधों की बात नहीं है; यह हमारे जीवन की बात है। आइए, इसे संजोएं और संरक्षित करें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'साक्षीमक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)



सुचित्रा आर्य

धरती पर कौन, कहाँ और किस परिवार में जन्म लेगा, यह मनुष्य के अधिकार क्षेत्र से परे है। जन्म का विधान स्वयं विधाता की योजना है। किंतु सृष्टिकर्ता ने जब मनुष्य को इस धरती पर भेजा, तो उसे प्रकृति के माध्यम से समानता का अप्रत्यक्ष अधिकार भी प्रदान किया। प्रत्येक शिशु जब जीवन में प्रवेश करता है, तो उसके पोषण, सुरक्षा और अस्तित्व के अधिकार किसी से कम नहीं होते। किन्तु धरती पर आगमन के बाद यही समानता संसाधनों की होड़ और

सामाजिक व्यवस्थाओं की विसंगतियों में बदल जाती है। यहीं से भेदभाव और असमानता का आरंभ होता है—सामाजिक, धार्मिक, लैंगिक और आर्थिक स्तर पर। परिणामस्वरूप, जहाँ एक वर्ग संसाधनों पर विशेष अधिकार जमा लेता है, वहीं गरीब और भूमिहीन परिवार जीवन के सबसे बुनियादी अधिकार—आवास भूमि—से वंचित रह जाते हैं। रोटी और कपड़ा श्रम व साधनों से जुट सकते हैं, किंतु आवासीय भूमि का अधिकार केवल राज्य की नीति और न्यायपूर्ण व्यवस्था से ही सुनिश्चित होता है। यह कैसा विडम्बनापूर्ण यथार्थ है कि जिस देश में पाँच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने, विश्व की तीसरी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति होने और २५ करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकालने के दावे किए जाते हैं, उसी देश में ८० करोड़ लोग आज भी मुफ्त राशन की कतारों में खड़े होने की विवश हैं। विडम्बना यह भी है कि एक विशाल जनसमुदाय आज तक आवासीय अधिकारों से वंचित है। असंख्य घूमन्तु और बदहाल परिवार

आज भी दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। उनके पास न स्थायी आवास है, न स्थायी पत्ता। यही कारण है कि 'स्थायी पते' की शर्त के नाम पर उन्हें लोकतंत्र में मताधिकार से वंचित कर दिया जाता है। जब उनका कोई स्थायी पता नहीं, तो वे न तो सरकारी योजनाओं का लाभ ले पाते हैं और न ही मताधिकार का सही प्रयोग कर पाते हैं। कभी रोटी, कपड़ा और मकान को समान रूप से मूलभूत अधिकार कहा गया था। परंतु आज का यथार्थ यह बताता है कि मकान सबसे पड़ता आधार होना चाहिए, क्योंकि जब तक आवास नहीं होगा, तब तक न रोटी और कपड़े की स्थिरता होगी और न ही लोकतंत्र में भागीदारी का वास्तविक अधिकार सुनिश्चित हो सकेगा। भूमि-अधिकार असमानता का प्रत्यक्ष परिणाम अतिक्रमण के रूप में सामने आता है। यदि आज भौतिक सत्यान किया जाए, तो यह स्पष्ट होगा कि लगभग २० प्रतिशत भूमि पर स्वयं सरकारी संस्थानों का अवैध कब्ज़ा है। ऐसे में केवल आम जनता को दोषी ठहराना न्यायोचित नहीं कहा जा

सकता। प्रशासन और नीतिगत उदासीनता इस समस्या की मूल वजह है। राज्यभर की ग्राम पंचायतों में अनेक राजकीय संस्थान—अस्पताल, विद्यालय, सहकारी समितियाँ, नंदीशालाएँ—गोचर, जोड़ और पायतन भूमि पर अनधिकृत रूप से स्थापित पाए जाते हैं। यह तब और भी गंभीर प्रतीत होती है जब सरकारी के पास आधुनिक लैंड रिकॉर्ड सिस्टम और पर्याप्त मानव संसाधन होने के बावजूद लापरवाही देखी जाती है।

परंतु विडम्बना देखिए, यही एक रूपया गरीब के लिए बसने का अधिकार नहीं खरीद सकता। भूमिहीन व्यक्ति यदि विवश होकर राजकीय भूमि पर झोपड़ी खड़ी कर ले, तो न जाने कब न्यायालय के आदेश पर बुलडोजर उसकी पूरी दुनिया उखाड़ दे। विशेष रूप से, ओबीसी, एससी और एसटी वर्ग इस संकट का सबसे अधिक शिकार हैं। उच्चावसीय समानता का अधिकार केवल कानूनी प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और संवैधानिक दायित्व का विषय है। जब तक ओबीसी, एससी और एसटी वर्ग की

—सुचित्रा आर्य,
पूर्व विधायक एवं सदस्य
ओबीसी काउंसिल प्रदेश कांग्रेस
राजस्थान

एक रंग से सबको नहीं लुभा सकते आप....

भी वक्त उठो, आस-पड़ोस का एकाध घर तो जागते हुए ही नजर आता है क्योंकि सबकी अपनी-अपनी टाईमिंग है। कोई देर तक जागते रहता है और कोई सुबह बहुत जल्दी उठ जाता है। यहाँ डिस्टर्बैस बहुत सारे हैं जबकि गांव में आठ-नौ बजे बाद वातावरण काफी शांत हो जाता है या यूं कहें कि शांत हो जाता था। अब तो क्या गांव और क्या शहर। गांवों में भी अब कितना—सा गांव रहा है। गांव में भी अब छत पर या बाख्ख में खाट डालकर सोने वालों की तादाद अब काफी कम हो गई है। गर्मियों में बिजली कटौती पर रातभर आने वाले कोप बताते हैं कि अब छत की खुली हवा की जगह एयरकंडीशनर ने ले ली है।

सोशल मीडिया पर आपकी सामान्य पोस्ट पर आमतौर पर वही चि्र-चरिचित लोग आते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि केवल वही लोग आपकी पोस्ट देख रहे हैं। और बहुत सारे लोग आपको देख रहे होते हैं लेकिन वे अक्सर लाइक या कमेंट नहीं करते और नजर नहीं आते। ऐसे में कभी-कभी जब आप विषयांतर करेंगे तो पाएंगे कि कुछ दूसरे लोग भी 'आए' हैं। ये लोग आपको देखते तो रहते हैं लेकिन आमतौर पर खामोश रहते हैं। यह कहलाल ही है कि इस्तेमाल और शोषण करने वाले भी चाहते हैं कि आप थोड़े चतुर बनें और ऐसे न रहें कि हर कोई आपका इस्तेमाल या शोषण कर सके। इस्तेमाल में भी उन्हें एकाधिकार चाहिए। केवल वे ही चुसते रहें। और कोई यह न कर सके। उन्हें कौन बताए कि कम और ज्यादा तो हो सकता है लेकिन यह कैसे संभव है कि केवल आपके लिए किसी के द्वार खुले रहें और दूसरे हर किसी को दूर से ही इनकार हो जाए। हालाँकि यह भी होता ही है। कोई—कोई ऐसा होता है जिसे जानते—समझते हुए भी आप ना नहीं कर सकते। बड़े—बुजुर्ग करते हैं कि यह गर्णों की बात है। किसी-किसी के गण ऐसे भारी होते हैं कि आप उन्हें कभी मना नहीं कर पाते। मना नहीं कर पाया भी जीवन का एक कोड है। एक स्वीकृति या मौन—सम्पत्ति कभी—कभी 'लम्हों ने खता की, सदिया ने सजा पाई' साबित हो जाती है। फिर भी आमतौर पर तो यही है कि आपका स्वभाव कमोबेश एक जैसा ही रहेगा, चाहे सामने कोई भी हो। निभाव जिसकी

करेंसी प्रबंधन में लापरवाही : सिक्कों की लागत से लेकर भ्रष्टाचार तक का जाल



सुरील दत्त गोयल

भारत की आर्थिक व्यवस्था में नकदी और सिक्कों का महत्व किसी से छुपा नहीं है। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि जिस संवेधानशीलता और दूरदर्शिता के साथ देश में मुद्रा प्रबंधन होता चाहिए, वह नदारद दिखाई देती है। हालात इतने गंभीर हो गए हैं कि आज सरकार और आरबीआई के अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाना ही नहीं, बल्कि कठोर कार्रवाई की आवश्यकता भी महसूस हो रही है।

आज से चालीस साल पहले जब एक पैसे और पाँच पैसे के सिक्के प्रचलन में थे, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि एक दिन बीस रुपये के सिक्के भी बाजार में उतार जायेंगे। लेकिन इस सफर में सरकार ने कभी यह नहीं सोचा कि जिस सिक्के को वह

जारी कर रही है, उसकी लागत सरकार को कितनी भारी पड़ रही है। उदाहरण के लिए, आज सिक्का बनाने में ही सरकार को उसकी मुद्रा से अधिक की लागत आती है। यानी, सरकार प्रत्येक सिक्के पर सीधा घाटा झेल रही है।

मैं आपको जयपुर स्थित भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की शाखा, जो रामबाग सर्किल पर स्थित है, के बारे में एक कड़वा सच बताने जा रहा हूँ। यहाँ पर बैंक खुलने के दो घंटे पहले ही लोगों की लंबी लाइन लग जाती है। यह कोई सामान्य लाइन नहीं होती, बल्कि इनमें स्थायी (परमानेंट) लोग होते हैं जो सुबह से शाम तक वहीं मौजूद रहते हैं।

चाहे वह सिक्के लेने आए हों या नए नोटों की गड़ियाँ, इन कतारों में ज्यादातर लोग एक विशेष धर्म और संप्रदाय से जुड़े हुए होते हैं। दुखद बात यह है कि के गाड़े से लेकर नोटों और सिक्के जारी करने वाले कर्मचारियों और अधिकारियों तक, सब इस गोरखधंधे में शामिल होने से इंकार नहीं किया जा सकता। इसका सीधा मतलब है कि ये लोग किसी और माफिया के लिए काम कर रहे हैं, और बदले में उन्हें कमीशन मिलता है।

सबसे बड़ी विडंबना यह है कि सब कुछ जानते हुए भी वहाँ कोई उन्हें

रोकने वाला नहीं है। यह देखकर बेहद अफसोस होता है कि आखिर सरकार की इंटीलिजेंस एजेंसियाँ और पुलिस अधिकारी इन सब से अनजान कैसे हो सकते हैं? सूत्रों के अनुसार, जब आरबीआई का स्ट्राफ नए नोट या सिक्के बैंकों को जारी करता है, तो पहले ही बैंक शाखा में अधिकारियों को फोन कर दिया जाता है कि "हमारा आदमी" आने वाला है। शाखा प्रबंधक मजबूरी में उस "आदमी" को नए नोटों की गड़ियाँ दे देते हैं क्योंकि वे आरबीआई के स्ट्राफ से टकराव नहीं कर सकते। इसका नतीजा यह है कि आम जनता तक १० और २० रुपये के नए सिक्के या नोट बहुत कम मात्रा में पहुंचते हैं, जबकि रिकॉर्ड में यह दिखाया जाता है कि भारी मात्रा में सिक्के और नोट जारी किए गए। असल में यह नोट और सिक्के ब्लैक मार्केट में बेचे जाते हैं।

१० और २० के सिक्कों की असली कीमत उनकी ऑफ़िक कीमत से कहीं अधिक है। उदाहरण के लिए, १० का सिक्का गलाने पर उसका मेटल १३ से १४ तक बिकता है। नतीजा यह है कि संगठित गिरोह इन सिक्कों को बड़ी मात्रा में इकट्ठा कर गलाते हैं और मेटल के रूप में बेचते हैं। यह गतिविधि खुलेआम हो रही है

और सरकार तथा इंटीलिजेंस एजेंसियाँ को इसकी जानकारी होनी चाहिए। इसके बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हो रही, जो यह दर्शाता है कि कहीं न कहीं ये एजेंसियाँ भी इस गोरखधंधे का हिस्सा बन चुकी हैं या जानबूझकर आंख मूंद हुए हैं।

प्रधानमंत्री से अपील : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दूरदर्शी नेता माना जाता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे इस गंभीर मुद्दे पर तत्काल सज़ाा लें। सरकार को चाहिए कि २० तक के सिक्के और छोटे मूल्यवर्ग की करेंसी का निर्माण बंद करे। साथ ही, यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि किसी भी करेंसी की उत्पादन लागत उसकी ऑफ़िक मूल्य के २० प्रतिशत से अधिक न हो। उदाहरण के लिए, यदि सरकार २० का सिक्का बना रही है, तो उसकी लागत ४ से अधिक नहीं होनी चाहिए।

छोटे मूल्य के सिक्कों के लिए यह लागत और भी कम – लगभग १.५० से २ के बीच रहनी चाहिए। मेरा सरकार को सुझाव यह है कि वर्तमान में जितने भी सिक्के प्रचलन में हैं, उनका साइज़ वही रखा जाए, लेकिन उनका वजन और उनमें उपयोग होने वाली धातु के मिश्रण व लागत कम की जाए। यह लागत इतनी कम होनी

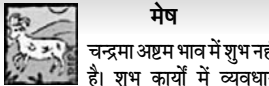
चाहिए कि यदि कोई व्यक्ति उस सिक्के को गलतकर बेचना भी चाहे, तो उसे उसके मुद्रित मूल्य के आधे दाम से भी कम मिले। इससे न केवल सरकार का राजकोषीय घाटा कम होगा, बल्कि सिक्कों के निर्माण में लगने वाली लागत भी घटेगी। साथ ही, इस तरह की कालाबाजारी और अवैध धंधे को आजकल चल रहे हैं, वे स्वतः ही बंद हो जायेंगे।

निष्कर्ष : करेंसी केवल लेन-देन का माध्यम नहीं, बल्कि देश का आर्थिक साख का प्रतीक है। जब सिक्कों की लागत ही उनकी ऑफ़िक कीमत से अधिक हो जाए और संस्थानों में भ्रष्टाचार घर कर ले, तो यह न केवल आर्थिक खतरा है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का भी मुद्दा बन जाता है। सरकार को चाहिए कि वह इस मुद्दे को गंभीरता से लेते हुए तत्काल कार्रवाई करे। अन्यथा, आने वाले वर्षों में यह समस्या इतनी विकराल हो सकती है कि देश की अर्थव्यवस्था को भारी क्षित पहुंचेगी। देशवासी उम्मीद करते हैं कि केन्द्र सरकार इस मुद्दे को प्राथमिकता देंगे और मुद्रा प्रबंधन को सही दिशा में ले जाने के लिए एक कदम उठाएंगे।

रोटेरियन सुरील दत्त गोयल

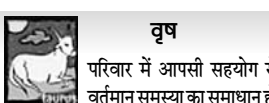
महानिदेशक, इम्पीरियल

चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री



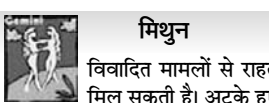
मेघ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।



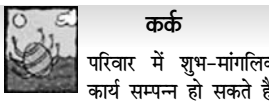
वृष

परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उसव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।



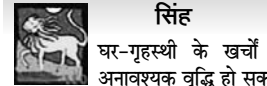
मिथुन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।



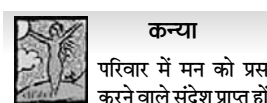
कर्क

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



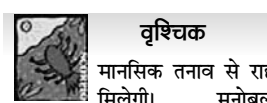
सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।



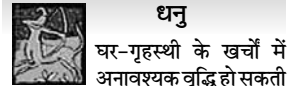
कन्या

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।



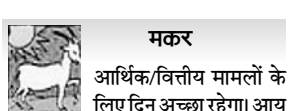
तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।



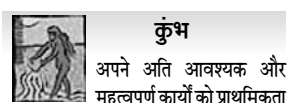
धनु

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।



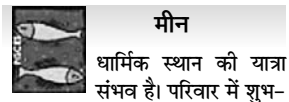
मकर

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।



कुंभ

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से कने का प्रयास करें। आज प्रयाशों में उचित सफलता मिल सकती है। परिवार में रचनात्मक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



मीन

धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।